**केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय गङ्गानाथझा परिसर, प्रयागराज एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद, दिल्ली के संयुक्त उपक्रम में आयोजित**

# राष्ट्रिय तन्त्रयुक्ति कार्यशाला

**29.08.2023 - 04.09.2023**

## *National Workshop on Tantrayukti and their Applications*

ज्ञान मनुष्य का तृतीय नेत्र है इस दृष्टि से ज्ञान नितान्त अपरिहार्य है और वह ज्ञान शिक्षा से प्राप्त किया जाता है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान एवं विज्ञान प्रस्फुटित होता है, ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य सुख शान्ति और समृद्धि प्राप्त करता है। प्राचीन काल में ज्ञान विज्ञान कला और शिल्प इत्यादि को परवर्ती पीढियों को प्रदान करने की परम्परा मौखिक माध्यम से सम्पन्न होती थी। ज्ञान का संग्रहण और उसके प्रभूत प्रचार प्रसार के लिए ग्रन्थ लेखन परम्परा आरम्भ हुई। ज्ञान अर्थात् प्रमा, यथार्थ बोध, और उसका तत्प्रकारानुभव । यह बोध किसी विषय को आश्रित करके ही हो सकता है। यदि किसी भी विषय का ज्ञान क्रमबद्ध रीति से एवं समग्रता से तर्क प्रमाणपूर्वक बुद्धिगम्य रीति से जब प्रस्तुत किया जाता है वही शास्त्र कहलाता है। जीवन में चारों पुरुषार्थों को सम्पादित करने में जो ज्ञान उपकारक होता है उसी को शास्त्र कहा जाता है।

**तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।**
**ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि।।** गी. 16.24

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण जी का यह वचन शास्त्र के माहात्म्य को सूचित करता है। शास्त्र हमारे लिए प्राणभूत तत्त्व के समान है। अतः शास्त्र क्या है? इस जिज्ञासा के समाधान के लिए कहा जाता है – शिष्यते अनेन इति शास्त्रम् अर्थात् जिसके द्वारा शासन किया जाता है वह शास्त्र है। शास्त्र यथार्थ तत्त्व अथवा परम तत्त्व का प्रतिपादन करता है। प्राचीन काल में यह विविध ज्ञान विज्ञान परवर्ति लोगों के लिए अथवा वंश के लिए हो इस विचार से ही हमारे ऋषियों आचार्यों ने शास्त्रों का प्रणयन किया। शास्त्रों की रचनापद्धति तथा उनका स्वरूप कैसा हो? शास्त्र सुखपूर्वक कैसे अवगमित हो? इसके लिए उन्होंने

अत्यधिक अनुसन्धान करके कुछ तन्त्र युक्तियों का प्रणयन किया। तन्त्रयुक्ति यह एक पारिभाषिक पद है। तन्त्र एवं युक्ति इन दो पदों का समास है। सर्वप्रथम तन्त्रम् यह पद तनु विस्तारे इस धातु से औणादिक ष्ट्रन् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। अर्थात् तन्यते अनेन इति तन्त्रम् अथवा तनोतीति तन्त्रं अभिप्राय यह है कि जिसके माध्यम से विषय का विस्तार किया गया हो अथवा जो विस्तार करता है वह शास्त्र ही है। तन्त्र अथवा शास्त्र सद् एवं असद् का विवेक करता है। सन्दिग्ध पदों अथवा पदार्थों में प्रमाण भूत तन्त्र ही है। जीवन में पुरुषार्थचतुष्टय के सम्पादन के लिए तन्त्र प्रामाणिक ज्ञान प्रदान करता है। यद्यपि तन्त्र शब्द के अनेक अर्थ हैं परन्तु प्रकृत प्रसङ्ग में शास्त्र यह अर्थ ही अधिक सङ्गत है। सुव्यवस्थित सुनिश्चित वैज्ञानिक सिद्धान्त नियम इत्यादि अर्थों में तन्त्र शब्द का प्रयोग वाराहीतन्त्र में देखा जाता है। तन्त्र शब्द का व्याकरणसम्मत अर्थ विस्तृति या विस्तार है। शङ्कराचार्य जी ने शास्त्र शब्द के लिए तन्त्र शब्द का प्रयोग किया है तथा साङ्ख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण द्वारा भी साङ्ख्यकारिका में **षष्टितन्त्रम् आह** ऐसा कहा है, अतः एव जो तत्त्व मन्त्र समन्वित विपुल अर्थों को प्रकाशित अथवा विस्तारित करता है वही तन्त्र शास्त्र है। अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि क्रमबद्ध सुव्यस्थित परिपूर्णविषय प्रतिपादन परक जो ज्ञान है वही तन्त्र है।

अब युक्ति इस पद विषयक जिज्ञासा में कहा जाता है कि – युक्तियां जहां जोडी जाती हैं अथवा सम्बन्धित अर्थों को सम्बद्ध किया जाता है, समीचीन प्रकार से प्राकरणिक अभिमत अर्थ में विरोध व्याघातादि दोषों को निराकृत करने वाले तर्कों को युक्ति जानना चाहिए। युक्ति, उपाय, हेतु, कारण, क्रमबद्धता, रचना, न्यास, समुचितादि इन शब्दों के लिए भी यह युक्ति पद प्रयुक्त होता है। चरकसंहिता में तो युक्ति का लक्षण भी प्रतिपादित किया गया है –

**बुद्धिःपश्यति यान् भावान् बहुकारणयोगजान्।**
**युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया॥** च. सू. 11.25

जिसके माध्यम से धर्म अर्थ काम इस त्रिवर्ग की सिद्धि होती है अथवा विज्ञात अर्थ में कारण उपपत्ति दर्शन के कारण से अविज्ञातार्थ का भी अवधारण युक्ति से ही किया जाता है। ज्ञातार्थ में सङ्गति देखकर अविदितार्थ में उसके समान ही विशेष रूप से निश्चय करना युक्ति है। तन्त्र की जो युक्तियां है वे ही तन्त्र युक्तियां हैं। अथवा शास्त्रावगमन उपाय और शास्त्र रचना उपाय तन्त्रयुक्ति है।

**तन्त्रयुक्तियां** - चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, अष्टाङ्गहृदय, अर्थशास्त्र इत्यादि ग्रन्थों में तन्त्रयुक्तियों का वर्णन प्राप्त होता है, परन्तु तन्त्रयुक्तियों का सर्वाधिक उपयोग न्यायशास्त्र के भाष्य में देखा जाता है। शास्त्र बोध के लिए जो उपाय भूत जो शास्त्र की रचना प्रसङ्ग में व्याख्यान प्रसङ्ग में अत्यन्त उपकारी होता है, वे युक्तियां होती हैं। निम्नलिखित श्लोक तन्त्र युक्ति के महत्त्व को प्रदर्शित करता है –

**अधीयानोऽपि तन्त्राणि तन्त्रयुक्त्यविचक्षणः।**
**नाधिगच्छति तन्त्रार्थमर्थं भाग्यक्षये यथा॥** च.सू.12.48

जैसे भाग्य के क्षीण हो जाने पर मनुष्य धन प्राप्त करने में असमर्थ होता है उसी प्रकार यदि कोई शास्त्रों का अध्ययन करने वाला अध्येता तन्त्र युक्तियों को नहीं जानता है अथवा तन्त्रयुक्तियों का प्रयोग कैसे करना है यह नहीं जानता है, तो वह अध्येता तन्त्रार्थ नहीं जान सकता है अर्थात् वह तन्त्रयुक्तियों को जानने में असमर्थ होता है। चरकाचार्य ने भी तन्त्रयुक्ति का महत्त्व कुछ इसी प्रकार वर्णित किया है –

**यथाऽम्बुजवनस्यार्कः प्रदीपो वेश्मनो यथा**
**प्रबोधस्य प्रकाशार्थं तथा तन्त्रस्य युक्तयः ।।** च.सू. 12.46
**एकस्मिन्नपि यस्येह शास्त्रे लब्धास्पदा मतिः।**
**स शास्त्रमन्यदप्याशु युक्तिज्ञत्वात् प्रबुध्यते।।** च.सू 12.47

उपर्युक्त श्लोक का अभिप्राय है कि कमल के विकास में सूर्य की रश्मियां हेतु भूत हैं , और जैसे दीपक सम्पूर्ण घर को प्रकाशित कर देता है उसी प्रकार तन्त्रयुक्तियां भी शास्त्र के गभीर अर्थों को प्रकाशित करती हैं। जिस किसी भी अध्येता अथवा पाठक की मति अथवा जिस किसी भी मनुष्य की बुद्धि किसी एक शास्त्र में भी प्रविष्ट हो जाती है ऐसा व्यक्ति अन्य गभीर शास्त्रों को भी अल्प प्रयास से और द्रुत गति से शास्त्र में प्रविष्ट हो जाता है। वहां भी युक्तिज्ञत्व ही हेतु है।

प्रयोजन को लक्ष्य करके ही सभी की प्रवृत्ति होती है विना प्रयोजन के कोई भी व्यक्ति किसी भी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता इस दृष्टि से तन्त्रयुक्तियों का क्या प्रयोजन है? इस जिज्ञासा में सुश्रुताचार्य ने तन्त्र युक्तियों के दो प्रयोजन कहे हैं –

**वाक्ययोजना** - असम्बद्ध वाक्य का सङ्गतीकरण जैसे – योग, उद्देश्य, और निर्देश।

**अर्थयोजना** – अप्रकटित अन्तर्निहित अर्थ का प्रकाशन अर्थयोजना कहलाती है, जैसे अधिकरण, पदार्थ, ऊह्य इत्यादि । शास्त्र रचना प्रसङ्ग में शास्त्र तत्त्व के प्रकाशन के प्रसङ्ग में शास्त्रावगमन सन्दर्भ में तन्त्रयुक्तियां मूलाधार के रूप में विद्यमान हैं।

शास्त्रों की रचना पद्धति का स्वरूप कैसा हो? शास्त्र रचना के लिए कोई व्यवस्था कुछ नियम और उपाय आचार्यों ने परिकल्पित किये गयें हैं। शास्त्रबोध सरलता से हो सके इसके लिए जो कुछ उपाय निर्दिष्ट किये गये हैं वे ही तन्त्रयुक्ति नाम से कहे जाते हैं।

भारतीयवाङ्मय में ईसापूर्व सप्तम शताब्दी पूर्व से ही तन्त्रयुक्तियों को अभिलक्षित करके अतीव सूक्ष्म रीति से विचार किया गया है । चरकसहिंता सुश्रुतसंहिता एवं अर्थशास्त्र में तन्त्रयुक्ति का नामोल्लेख परिलक्षित होता है, स्वतन्त्र रूप से भी आचार्यों ने इस विषय में ग्रन्थ रचे हैं। सभा में विरुद्ध विषयों के निर्णय प्रसङ्ग में तन्त्रयुक्ति का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार तन्त्रयुक्तियों के समीचीन ज्ञान के विना शास्त्रों का यथार्थ तत्त्वबोध नहीं हो सकता। अतः संस्कृत छात्रों तथा संस्कृत विद्वानों के लिए तन्त्रयुक्तियों का समुचित परिज्ञान होना अति आवश्यक है इस विषय को दृष्टि में रखते हुये केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय गङ्गानाथ झा परिसर एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् के संयुक्त उपक्रम में दिनाङ्क **29.08.2023** से **04.09.2023** पर्यन्त साप्ताहिकी राष्ट्रिय तन्त्रयुक्ति कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह आवासीय कार्यशाला होगी। कार्यशाला में तन्त्रयुक्तिविषयक लब्धप्रतिष्ठित विद्वान मार्गदर्शन करेंगें। कार्यशाला में तन्त्रयुक्ति विषय में व्याख्यान संवाद शास्त्रानुप्रयोग (आयुर्वेद) सम्बद्ध प्रयोगः अर्थ ज्ञान शास्त्रान्तर प्रयोग जैसे – व्याकरण न्याय एवं शिक्षा शास्त्र के विषय में चर्चा होगी। प्रतिभागियों की संख्या भी निश्चित है। सम्पूर्ण भारत में शिक्षा संस्थाओं में अध्ययनरत शोध छात्र एवं शोधकार्य में संलग्न शोध मार्गदर्शकों के लिए भी यह एक स्वर्णिम अवसर है ऐसा हमारा विश्वास है।

## तन्त्रयुक्तिकार्यशाला में बोधनीय प्रमुख विषय।

1. तन्त्रयुक्तियों के आलोक में पारम्परिक प्राचीन अनुसन्धान पद्धति का स्वरूपबोध।
2. आयुर्वेदग्रन्थ चरकसुश्रुतादि का तत्त्वावबोध: एवं व्याख्यान में तन्त्रयुक्तियों का योगदान।
3. शास्त्रान्तरों में परिगणित एवं विकीर्ण तन्त्रयुक्तियों का विस्तरश: परिज्ञान।
4. शास्त्रों के स्फुटतत्त्वबोधन के लिये, अवगमन के लिये, व्याख्यान के लिये तन्त्रयुक्तियों की उपयोगिता।
5. आयुर्वेदेतरशास्त्रों में तन्त्रयुक्तियों का विनियोग:।
6. तन्त्रयुक्तियों का समाश्रयण कर शास्त्ररचना, शास्त्रव्याख्यान, शास्त्रावगमन।
7. तन्त्रगुणों का (सच्छास्त्ररचना / सच्छास्त्र के गुण), तन्त्रदोषों (दोषयुक्त शास्त्रप्रणयनम्) का परिचय:।
8. प्राचीनार्वाचीनशास्त्रों में तन्त्रगुणों का तन्त्रदोषों का विमर्श।

## आमन्त्रित विद्वान –

1. प्रो.दिलीप गाडगिल, निवृत्ताचार्य तिलक आयुर्वेद महाविद्यालय, पुणे
2. प्रो.जे.एस आर, प्रसाद, आचार्य, संस्कृत अध्ययन केन्द्र, हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय
3. प्रो.जयरामन् आचार्य, स्वामी विवेकानन्द योग अनुसन्धान संस्था, बैङ्गलूरू
4. प्रो. माधव विजय आष्टीकर, सहाचार्य, दत्ता मेघे आयुर्वेद कॉलेज, नागपुर
5. डॉ. गिरीन्द्र सिंह तोमर, पूर्व प्रधानाचार्य, हण्डिया राजकीय आयुर्वेद कॉलेज, प्रयागराज
6. प्रो. विजयपाल शास्त्री, आचार्य, के.सं.वि. रघुनाथकीर्ति परिसर, देवप्रयाग
7. वैद्य श्रीप्रसाद डी. बावाडेकर, आयुर्वेदाचार्य, अनुसन्धान विभागाध्यक्ष, ज्ञान प्रबोधिनी, पुणे

**पञ्जीकरण की अन्तिमतिथि** **20.08.2023(5:00 PM)**
**कार्यशाला की अवधि -** **29.08.2023 - 04.09.2023**
**आवेदन लिंक -** **https://forms.gle/ZUAmt4ncwc818Dxk7**

## कार्यशाला में भागग्रहण हेतु निर्देश -

1. पञ्जीकरण निर्दिष्टतिथि पर्यन्त करना होगा।
2. कार्यशाला आफलाईन माध्यम से होगी।
3. कार्यशाला में आचार्य, सहाचार्य, सहायकाचार्य, और शोधच्छात्र भाग ग्रहण कर सकते हैं।
4. भागग्रहण के लिए आनलाइन आवेदन करना होगा। आवेदनों के समीक्षा के उपरान्त चुने गए आवेदन कर्ता को सूचित किया जायेगा।
5. चुने गए आवेदन कर्ता के लिये पञ्जीकरण करना अनिवार्य है।
6. कार्यशाला हेतु चुने गये प्रतिभागियों के लिए आवास व्यवस्था और भोजन व्यवस्था की जायेगी।
7. कार्यशाला हेतु चुने गये प्रतिभागियों के लिए A.C III Tier का मार्गव्यय दिया जायेगा।
8. प्रतिभागियों की उपस्थिति 95% अनिवार्य है, उपस्थिति के आधार पर ही प्रमाण पत्र दिया जायेगा।
9. कार्यशाला में प्रदत्त कार्य अनिवार्य रूप से सम्पादित करना होगा।

**संरक्षक**

**प्रो. श्रीनिवासवरखेडी**

कुलपति, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय,
जनकपुरी, नई दिल्ली

**संयोजक**

**प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र**

सदस्य-सचिव,
भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्,
नई दिल्ली

**प्रो. ललितकुमारत्रिपाठी**

निदेशक, गङ्गानाथझापरिसर,
प्रयागराजः (उ.प्र.)

**सह संयोजक**

**प्रो. देवदत्तसरोदे**

संयोजक, शोधविकासप्रकोष्ठ

**संयोजनसमिति**

डॉ. मनीषजुगरान
डॉ. मोनालीदास
डॉ. यशवन्तकुमारत्रिवेदी
डॉ. धीरजकमारमिश्र
डॉ. रूपलालशर्मा

**प्राविधिकसमिति**

श्री अनुरागसाहू
श्री अभय अग्रहरि

सम्पर्कसूत्रम् –
डा. यशवन्तकुमारत्रिवेदी – 7752847621